"तिन दुनी करी मुरदार"

श्रीमती अनिता खुराना (जयपुर)

उपरोक्त शीर्षक के शब्दों का अर्थ यही है कि उन्होंने दुनियाँ को मुरदार कर दिया। अब मुरदार शब्द का अर्थ है मृतक समान अथवा जिस प्रकार एक मुर्दे के लिए माया या दुनियाँ का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता ठीक उसी प्रकार हमारे वास्ते दुनियां हो जाए-इसमें दो अंश सम्मिलित हैं कि या तो स्वयं को मुर्दे के समान समझें या दुनियाँ की वस्तुओं व सम्बन्धों में सार न समझें। अब सवाल उठता है उन्होंने में कौन हैं ? उन्होंने के जवाब में निम्न चौ० का सार है-

हक लज्जत आई मोमिनों,
तिन दुनी करी मुरदार ।

जिनको हक की लज्जत आ गई है अर्थात् जीते जी इस दुनियाँ को मुरदार वही मोमिन समझ सकते हैं जिनको अल्लाह ताला धाम धनी की साहिबी की, इश्क की, अपने घर श्री परमधाम के तौर तरीकों की लज्जत (एहसास) आ गई हो।

स्वामी जी के साथ चलने वाले मोमिनों ने घर गृहस्थी, परिवार, लोक-लाज, मर्यादा मोह के बन्धनों की तोड़कर हादी स्वामी जी के कदमों पर कदम धरने की ठान ली थी। पहचान होते साथ ही अर्श की अरवाहें दुनियाँ को तुच्छ समझने लगती है-धाम धनी की पहचान करते साथ ही हक्कुल यकीन वाले मोमन माया के जंजालों को छोड़-छाड़ कर चल पड़े थे-धनी से एक पल भी जुटा होना उनकी रूह ने गंवारा नहीं किया। पहली मेहर, पहला इश्क धनी की नजर का पीते साथ ही रूह में बल भी परम धाम का आ जाता है।

"हकें लिख्या कुरान में, पहले मेरा प्यार।
जो तू पीछे दोस्ती करे, तो भी मेरे सच्चे यार।"

लेकिन चलते-चलते जब मायावी दज्जाल स्वरूप कई कष्ट आने लगे तो ईमान में गड़बड़ होने लगी कि यदि ये अक्षरातीत हैं तो फिर इतने कष्ट और मारें क्यों खानी पड़ती है, तो सुन्दर साथ के दिलों में कुछ शंका सी पैदा होने लगी और साथ आपस में भी कुछ मतभेद होने तो उदयपुर के ताल पर आकर स्वामी जी ने मोमनों के दिलों में बैठी हुई माया को निकालने का साधन ढूंढ़ा कि सब सिनगार जो शरीरों के एकत्व में बाधक सिद्ध हो रहे हैं उनको उतार एक रूप होकर एक भाव से आत्म सम्बन्ध को ऊपर तथा शारीरिक पुष्टियों की तुच्छ करवा कर छोड़ा। वैसे तो सब धनी पर फिदा थे लेकिन जो कणमात्र भी माया का लेश मनों में रह गया था वह भी फकीरी वेश में आने पर पूर्णतः जाता रहा। जिस प्रकार विद्यालयों में

Nijanand App

यह नियम होता है कि विद्यार्थियों में ऊँच नीच की भावना पनपने न पाए, उनके लिए यही उपाय रखा जाता है कि सब एक सी पोशाक (जो सबको सुविधानुसार होती है) पहन कर ही विद्यालय में प्रवेश करें ताकि वस्त्रों के आधार पर किसी में हीन और उच्च भावना प्रविष्ट न हो। एक ही तरह के जूता-कपड़े पहनवा कर यह प्रयास किया जाता है कि न तो जाति-भेद न ही वर्ग-भेद और न ही किसी और तरह का मतभेद का भाव पनप पाए, ठीक उसी तरह स्वामी जी ने जब देखा कि यह कपड़े और सिन-गार ही शरीरों से लेकर मनों तक मतभेद या विकार पैदा कर रहे हैं तो सबको निगुण भेष करवा कर चलने का आदेश दिया। इससे स्वामी जी को यह भी देखने को मिला कि कौन कितने कष्ट से माया को छोड़ रहा है और कौन कितनी खुशी से माया को छोड़ रहा है। स्वयं स्वामी जी ने भी समरूप धारण किया। अब कहने की तो यह भी कहा जा सकता है कि स्वामी जी अक्षरातीत थे वे यदि चाहते तो क्या नहीं कर सकते थे लेकिन नहीं मोमनों को राह पर चल कर स्वयं पथ प्रदर्शन किया कि हो सकता है आने वाले युग में वाँणी पर ईमान लाने वालों को कष्ट उठाने पड़े तो घबराने की आवश्यकता नहीं--साथ ही वही अगुआ सफल माना जाता है जो स्वयं वही आचरण करे जिसका वह आदेश दे, इसके अलावा तो स्वामी जी ने तो भाव ही वही पैदा किया है कि--

"हम तुम एक वतन के, अपनो रूप नहीं दोय।"

जब रूह अलग नहीं तो भेष व भाव अलग क्यूँ ? तभी यह किरन्तन भी उतरा--

कारी कामरी रे, मोको प्यारी लागी तू।
सब सिनगार को शोभा देवे,
मेरा दिल बंध्या तुझसों।

दिल बांधने का मतलब यह कि हम दिल से गरीबी भाव लें न कि ऊपर तो वेष साधु का और दिल में पद की लोलुपता, मान व बड़ाई--सुन्दर साथ का एक भाव भी नहीं। अतः आज भी देखा जाता है सुन्दर साथ अपने वस्त्रों आदि के दिखावे में अधिक और प्रेम-भाव में कम रहता है बल्कि एक धर्म स्थान पर यदि यह नियम भी हो कि साधारण वस्त्रों में ही प्रवेश होगा तो शायद उचित रहेगा। वे थे मोमिन जिन्होंने सहर्ष वेष धारण किए और निर्गुन वेष होकर धनी की आज्ञा को सिर चढ़ाया। बल्कि खुशी जाहिर की कि वाह ! धनी क्या २ रङ्ग माया में दिखा रहे हो--धाम में तो वस्त्रों का चक्कर ही नहीं--न पहनना, न उतारना, न नया न पुराना। और तो और गरीबी दावे की चरम सीमा पर पहुंचा दिया कि कोई को भेद या झूठा सुचा नहीं, सबकी रसोइयों में से टुकड़े मंगवा कर स्वयं भी ग्रहण किए और सुन्दर साथ ने भी किए। साथ ही आने वाले सुन्दर साथ को यह आभास करवाया कि किसी भी तरह का व्यक्ति जो भाव सुन्दर साथ के रखता हो उसकी की हुई सेवा में दुर्भाव नहीं बल्कि प्रेम स्नेह से सहर्ष स्वीकार करनी चाहिए। ये सब उदाहरण इसलिए हैं कि हम स्वतः ही अपने भावों को निर्मल करते जायें--यदि हम तहे-दिल से हादी के कदमों पर कदम रखने के इच्छुक हैं। आज भी हम सुन्दर साथ बड़े २ उत्सव भी रख लेते हैं--भण्डारे भी कर लेते हैं--कभी श्री प्राणनाथ जयन्ती कभी श्री छत्रसाल जयन्ती--उनकी याद

Nijanand App

में तीज-चौथ का व्रत लेकिन अफसोस कि सुन्दर साथ में आपस में जो भाव हैं–ये बड़े हम छोटे या ये ऊँचे हम नीचे या धनवान और गरीब इन भावों को हटाकर एक आत्म के नाते से समभाव पैदा करने में या उस ओर ध्यान ही नहीं दिया जाता है। आत्म सम्बन्ध को देखने वाली नजर तो बन्द रहती है बस शरीरों से गुण अवगुणों को देखकर ही या सामाजिक स्थिति (Status) को देखते हुए धार्मिक ग्रंथों पर उनको अग्रसर किया जाता है–पर मैं तो यही कहूंगी कि "धनी न जाए किन की धूत्यो, भले अनेक करो धुतार।" जबकि स्वामी जी ने तो सब सेठियों को, ज्ञानियों को यहाँ तक कि महाराजा को भी उसी लाइन (अंगना, रूह मोमिन) में लाकर खड़ा कर दिया जिसमें भाव एक ही। वैसे भी यदि धाम की रीति को देखें तो वहीं राज और श्यामा जी (युगल स्वरूप) की Status के बाद सबकी एक ही स्थिति है कि मिल जुल कर एक जुत्थ होकर हर पल राजी व श्यामा जी को रिझाने में सखियाँ व्यस्त हैं। यह सब भेद यहाँ माया में आकर ही बने हैं जहाँ पाँच तत्व व तीन गुणों की रचना है, इन गुणों से ऊपर है आत्म तत्व, जिसकी पहचान होने के बाद ही हम उस नजर से धर्म की राह पर चलकर सफल हो सकते हैं। परम धाम में न तो कोई स्त्री है न ही पुरुष सब एक ही तत्व धनी के नूर से बने हैं न कोई वहाँ लोक-लाज है न परिवार है न मर्यादा है न बड़ा है न छोटा केवल एक ही इश्क प्रेम का व्यवहार ही अष्ट पहर चौसठ घड़ियाँ चलता है।

स्वामी जी के समय पर मोमिनों ने दुनियाँ को मुरदार समझ कर त्याग दिया राजा राम भाई सेठ लखन दास, चिंतामण, महाराजा छत्रसाल आदि ने फिर मुड़कर पीछे माया को देखा तक नहीं। उसके बाद फिर इस काल में जिस २ मोमिन का हक की लज्जत व धाम की हुज्जत दिल में आ गई उन्होंने फिर इस फानी दुनियाँ को तिनके की तरह मरोड़ कर रख दिया है। कहने को तो हम सभी ही यह कहते हैं कि दुनियाँ या शरीर सब मुरदार है–एक न एक समय इस झूठ की झूठ में ही विलीन होना है लेकिन दिल से त्यागना बहुत कठिन कार्य है, कोई बिरला ही दिल से यह भाव रखता है और फिर वह हादी के कदमों पर पल २ कुर्बान होता चला जाता है–फिर उसे अपने शरीर के सुख दुख की, कपड़ों की, मान सम्मान की परवाह कम और धनी के गुणों को अपनाने की चिन्ता अधिक रहती है कि धनी ने जो राह बतायी है उस पर चलें या फिर वहीं वायदे निभाने की चिन्ता रहती है कि कहा था माया में भी इश्क का व्यवहार करके दिखायेंगे। जैसे अक्षरातीत ने माया में इश्क निभाया है–रूहों के लिए सब मायावी दुखों के सहर्ष स्वीकार लिया हालांकि दुनियाँ वालों ने उन्हें कहाँ चैन से रहने दिया। रूहों को यह बता दिया कि मेरे अंगों कल को तुम्हें भी कष्ट उठाने पड़े तो निराश न होना और न ही अपने ईमान से डोलना–बस दुनियाँ को मुरदार समझ कर जिसको कल छोड़ना है आज ही छोड़ कर सीधी धनी की राह पर चलते रहना।

"क्या कहसी कायर माया को,
बल जो गए सागर में रल।
जो रहसी धनी के सन्मुख,
सो कहसी दिखाई मोह जल।"

भले कोई प्रेम या बलिदान के प्रत्युत्तर में

Nijanand App

निन्दा व लानते ही देगा लेकिन वह रूह मोमन धनी का बल लेकर धनी पर आश्रित होकर धनी के हुक्म से विचलित नहीं होगी। जैसा कि यह तो सर्व विदित ही है कि जिस पेड़ को फल लगता है वह सदैव झुका हुआ ही दीखता है और जो झुकता नहीं वह टूटता है। हीरा कभी अपने मुँह से नहीं कहता कि मेरा लाख टका मोल है-यह तो पारखी ही पहचानता है कि इसका मोल क्या है ?

जिसको धनी के साथ अपने सम्बन्ध का एहसास हो गया है उसे फिर यह फानी दुनियाँ नहीं सुहाती है–वह तो फिर धनी के हाल पर अपना हाल छोड़कर जीवन यापन करती चली जाती है और मायावी व्यवहारों को भी धनी पर छोड़कर स्वत: निर्मल भाव से धनी को मन ही मन रिझाने में तल्लीन रहती है–सच का आभास झूठ से दूर रहता है। दिल में यदि धनी का दर्द पैदा हो गया तो विरहणी को तो फिर रतन जड़ित मन्दिर भी उठ २ कर खाने को आते हैं, फिर उसे हेम जवेर सिनगार में लज्जत नहीं आती, वह तो इस निर्णय पर पहुंच जाती है कि ये सब तत्व तो यही पाँच तत्व में मिलकर रह जाने हैं केवल सुरता, ख्याल या रूह ने ही धनी के चरणों में जाग कर उस अखण्ड आनन्द में विलीन होना है–बस फिर वह धनी के कार्य में व्यतीत समय को ही सार्थक समझती है–दुनियाँ तो स्वमेव धनी छुड़ाते चले जाते हैं–जिस मुरदार को एक न एक दिन छोड़ना ही है।

अरस परस यूँ भई बज्जर में,
सो मेरे धनिए दई छुटकाय।
मरेंगे न मोमन तो क्या,
मरेंगे मुनाफक ।

भजन

हजार बातें कहे जमाना मगर खुदा पे यकीन रखना
हर इक अदा हक ने जो दिखाई उसी अदा पे यकीन रखना
यह लाज लज्जत की जिन्दगी भी, हमें मिली है जो वे बसी में
यही रजा है मेरे धनी की, इसी रजा पे यकीन रखना
हुकम से अपना क्या वासता है, बसाया हाकिम जब अपने दिल में
हुकम भी हाकिम का बेखता है, रब की सदा पे यकीन रखना
जो इश्क अपना छुपाते हैं तो छुपा-छुपा के रखा रें वह
बफा फना में हमी ने लेना है, इश्क हक से यकीन रखना

(मास्टर हंसराज हंस)

Nijanand App